कर्नाटक → गुलबर्गा

Bahmani Kingdom
बहमनी साम्राज्य

By- Manju Kumar

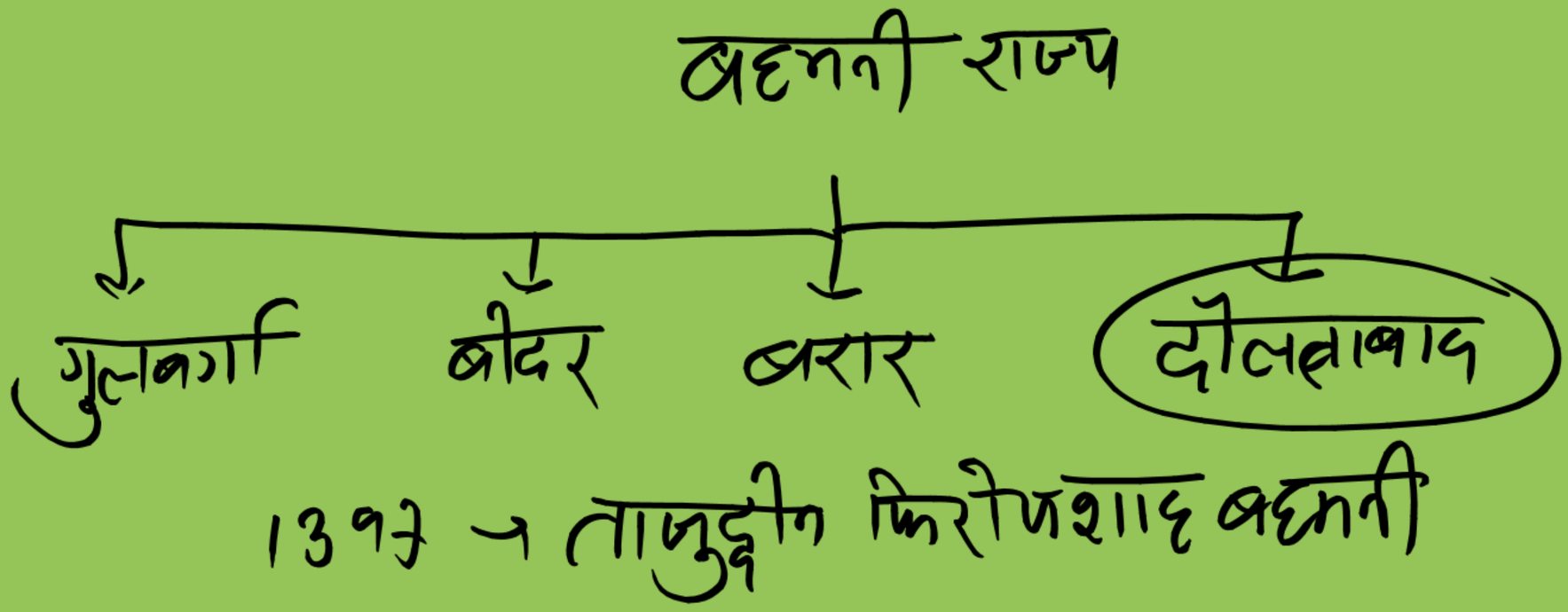
बहमनी राज्य
गुलबर्गा
बीदर
बरार
दौलताबाद
1347 → ताजुद्दीन फिरोजशाह बहमनी

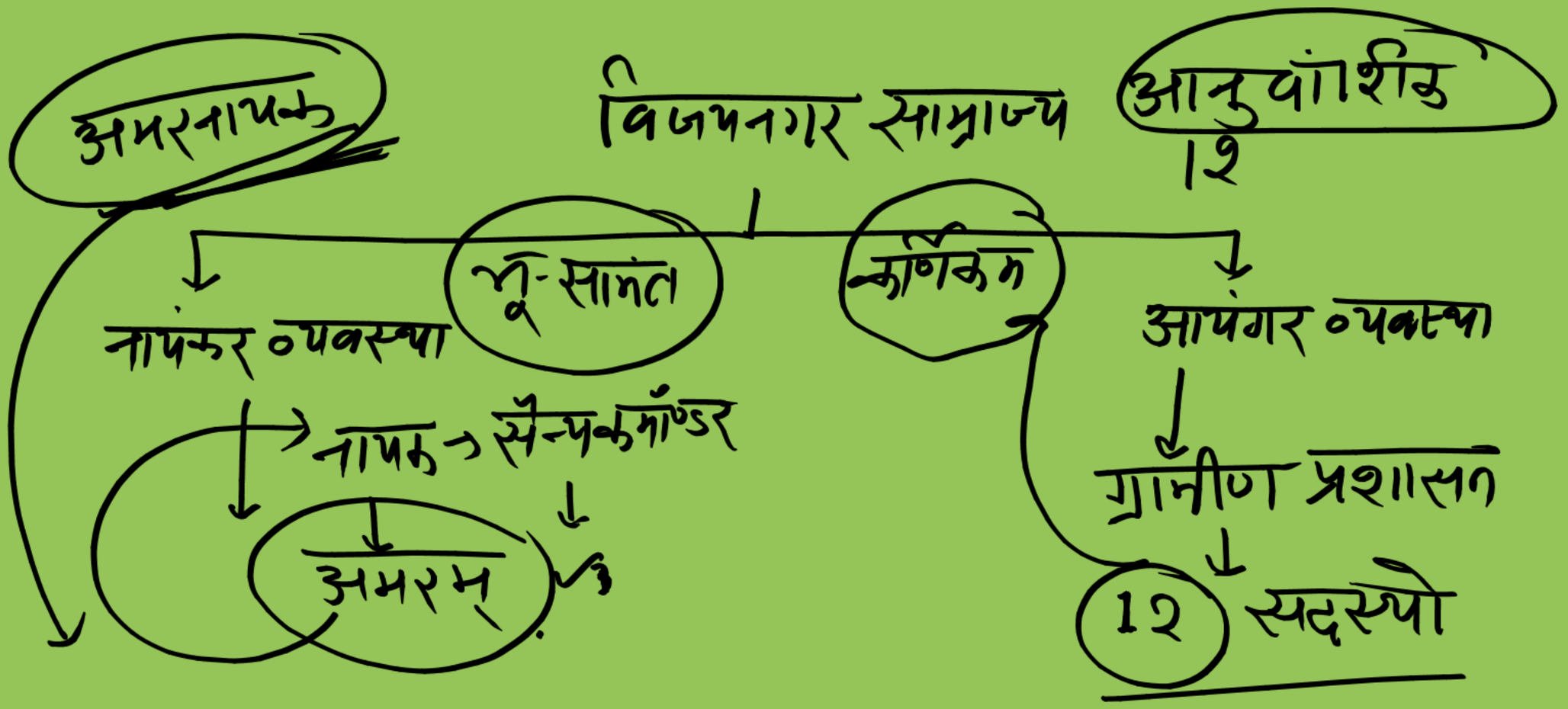

विजयनगर साम्राज्य
अमरनायक
आनुवांशिक
12
भू-सामंत
कर्णिकम
नायंकर व्यवस्था
आयंगर व्यवस्था
नायक → सैन्यकमांडर
अमरम्
ग्रामीण प्रशासन
12 सदस्यों

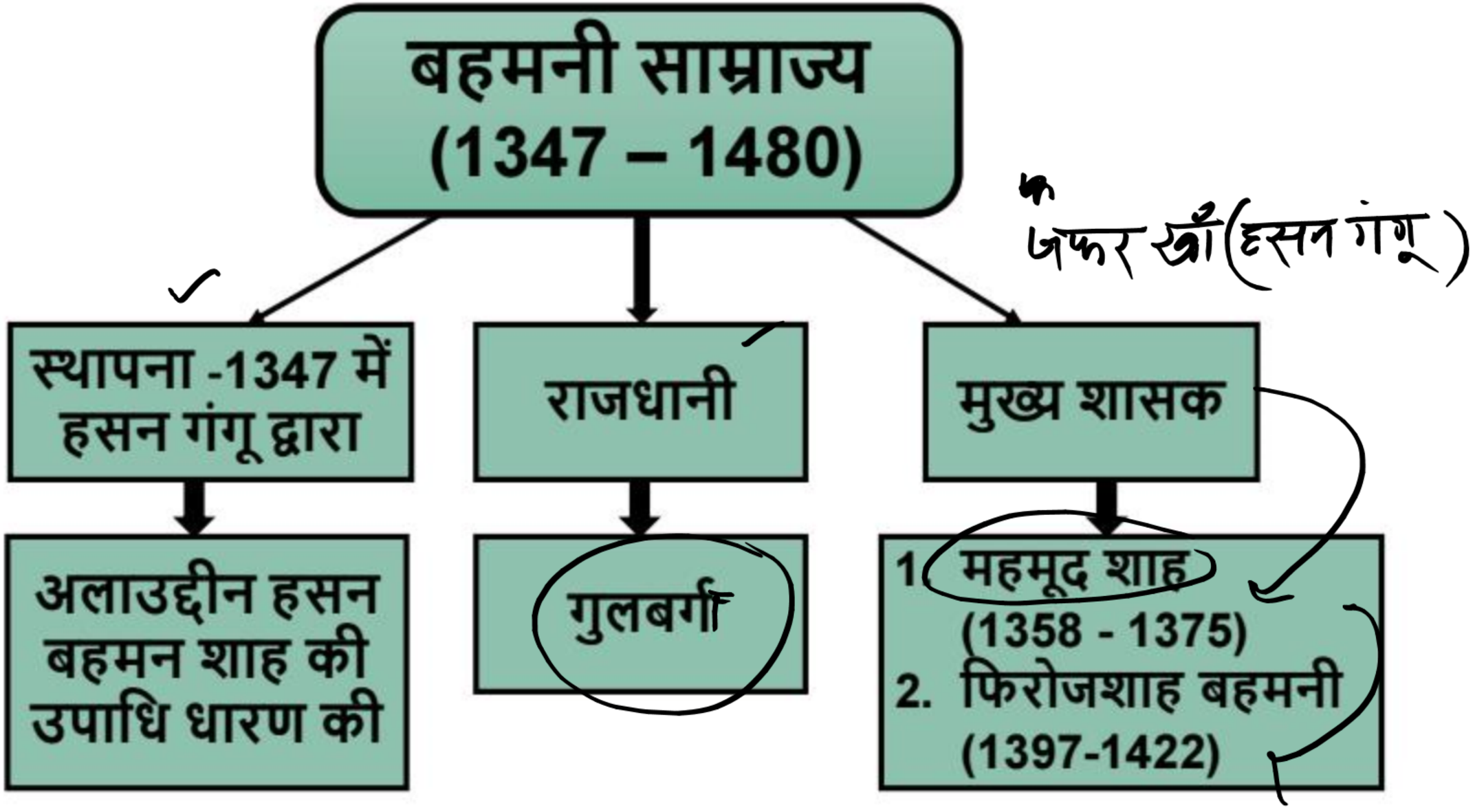
बहमनी साम्राज्य
(1347 – 1480)
जफर खाँ (हसन गंगू)
स्थापना -1347 में
हसन गंगू द्वारा
राजधानी
मुख्य शासक
अलाउद्दीन हसन
बहमन शाह की
उपाधि धारण की
गुलबर्गा
1 महमूद शाह
(1358 - 1375)
2. फिरोजशाह बहमनी
(1397-1422)

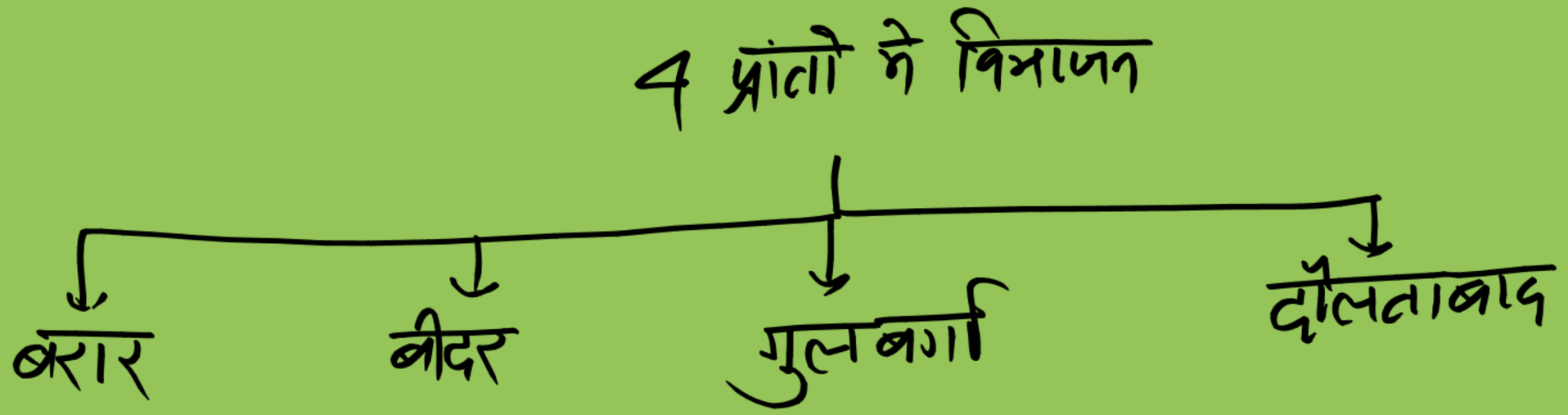
4 प्रांतो मे विभाजन
बरार
बीदर
गुलबर्गा
दौलताबाद

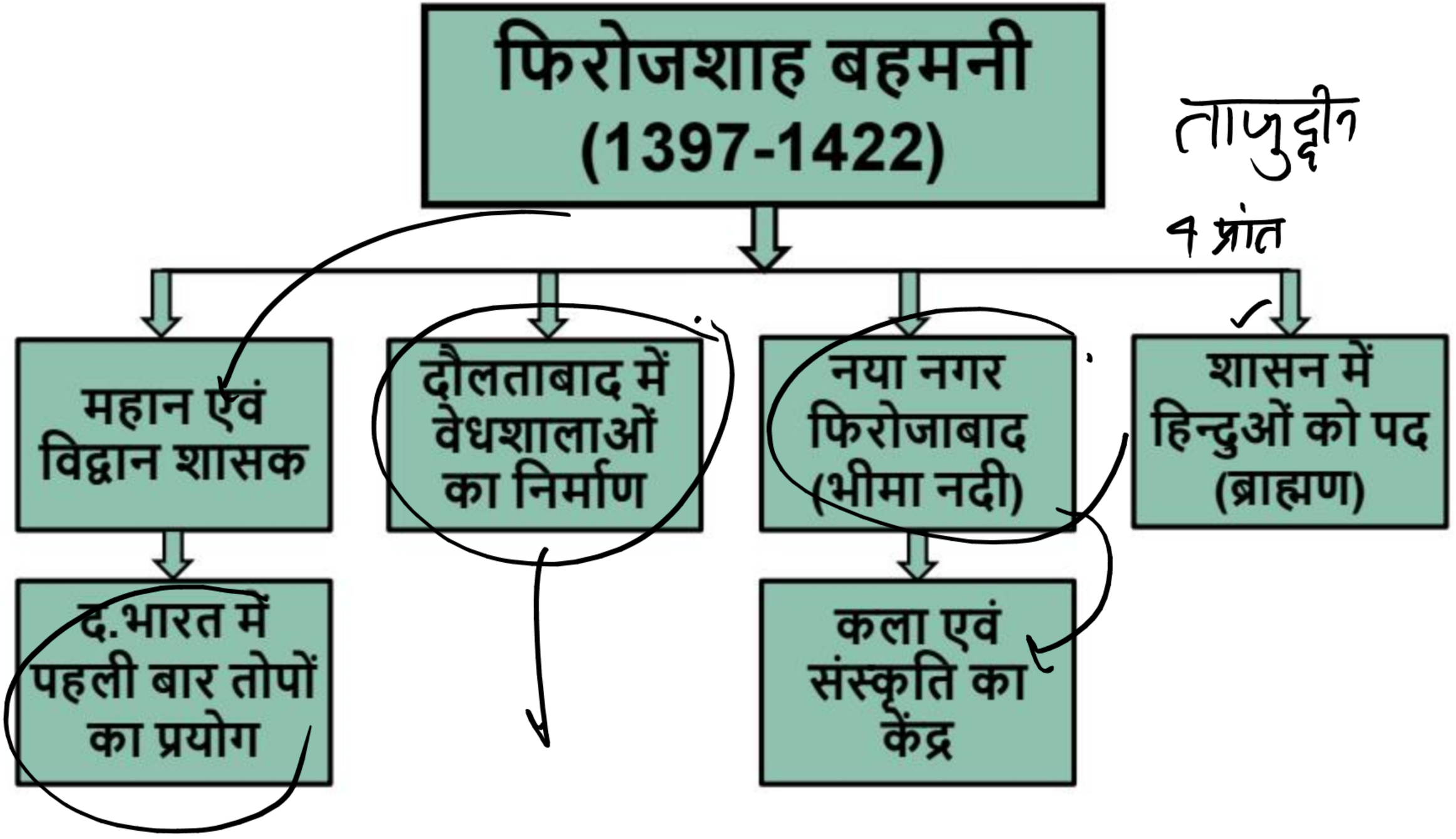

फिरोजशाह बहमनी (1397-1422)

ताजुद्दीन

4 प्रांत

- महान एवं विद्वान शासक
  - द.भारत में पहली बार तोपों का प्रयोग
- दौलताबाद में वेधशालाओं का निर्माण
- नया नगर फिरोजाबाद (भीमा नदी)
  - कला एवं संस्कृति का केंद्र
- शासन में हिन्दुओं को पद (ब्राह्मण)

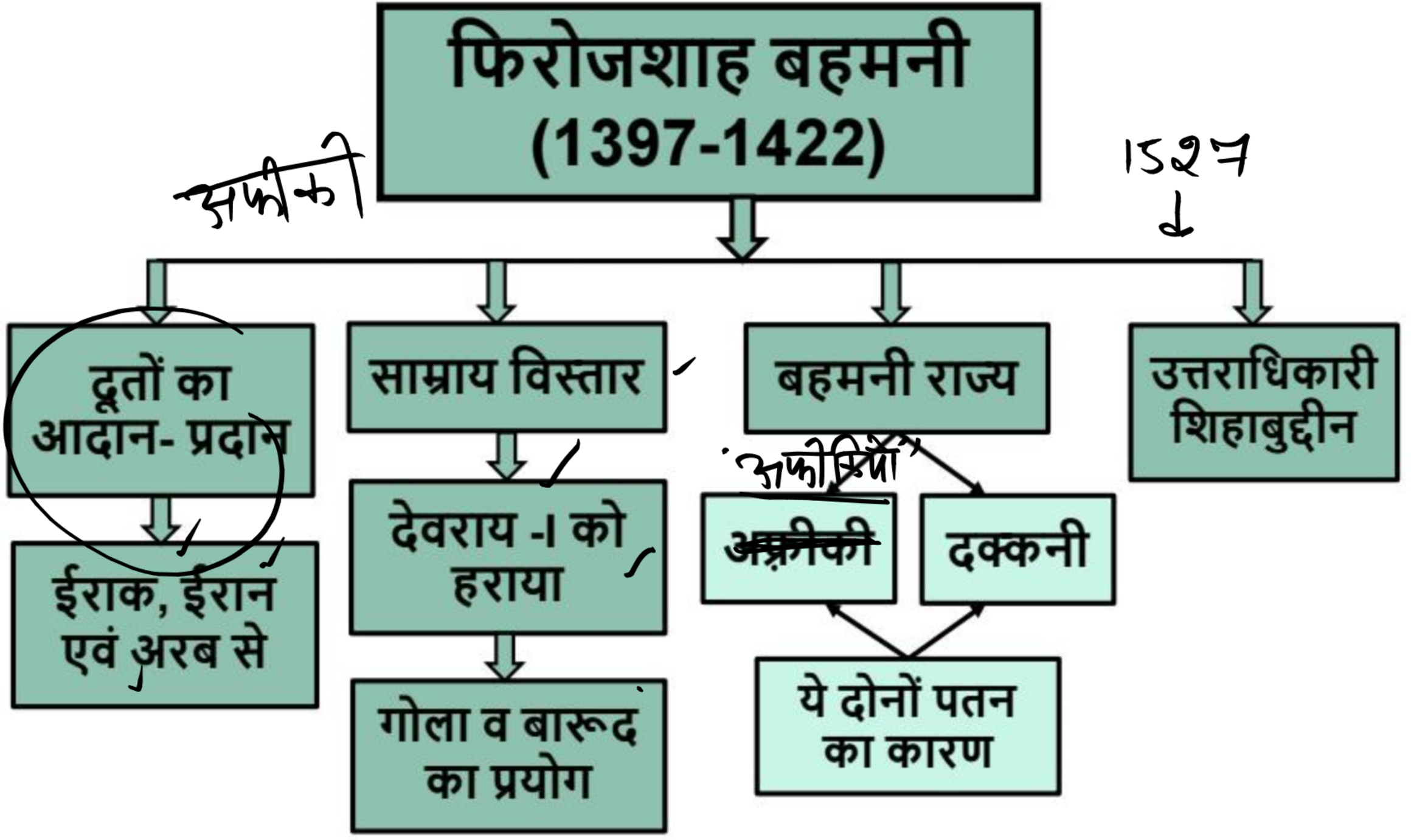
फिरोजशाह बहमनी
(1397-1422)
दूतों का आदान- प्रदान
ईराक, ईरान एवं अरब से
साम्राय विस्तार
देवराय -I को हराया
गोला व बारूद का प्रयोग
बहमनी राज्य
अफ्रीकी
दक्कनी
ये दोनों पतन का कारण
उत्तराधिकारी शिहाबुद्दीन

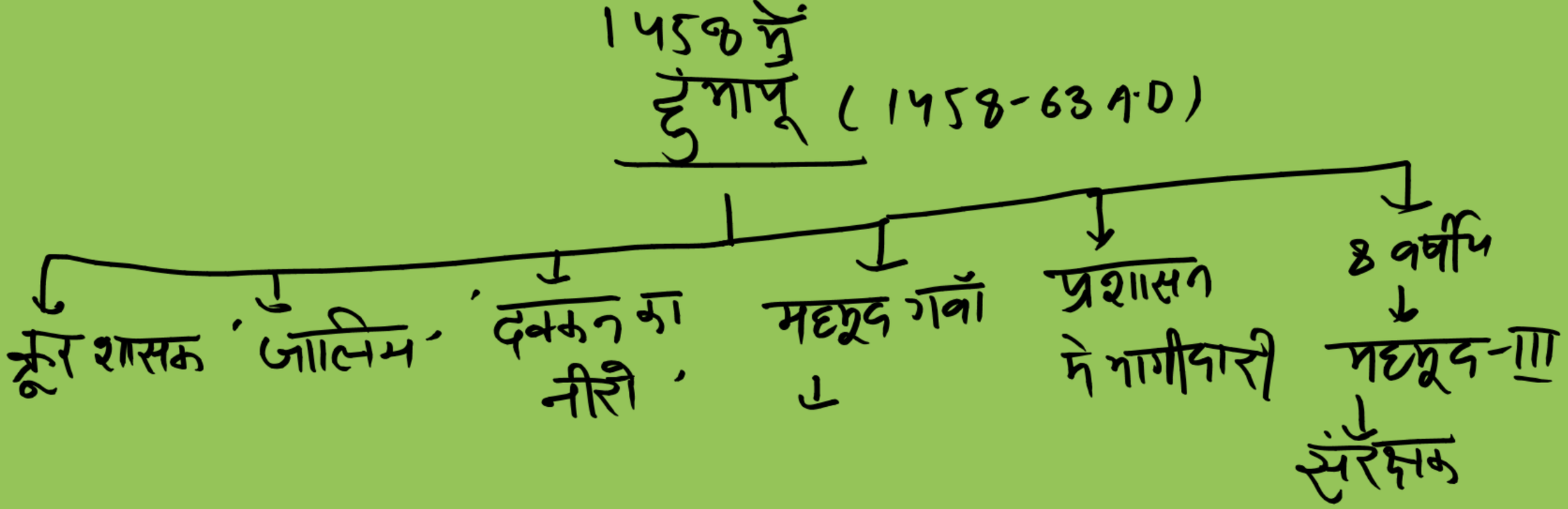

1458 ई.

हुमायूं (1458-63 ई॰)

- क्रूर शासक
- 'जालिम'
- 'दक्कन का नीरो'
- महमूद गवाँ ↓
- प्रशासन में भागीदारी
- 8 वर्षीय → महमूद-III → संरक्षक

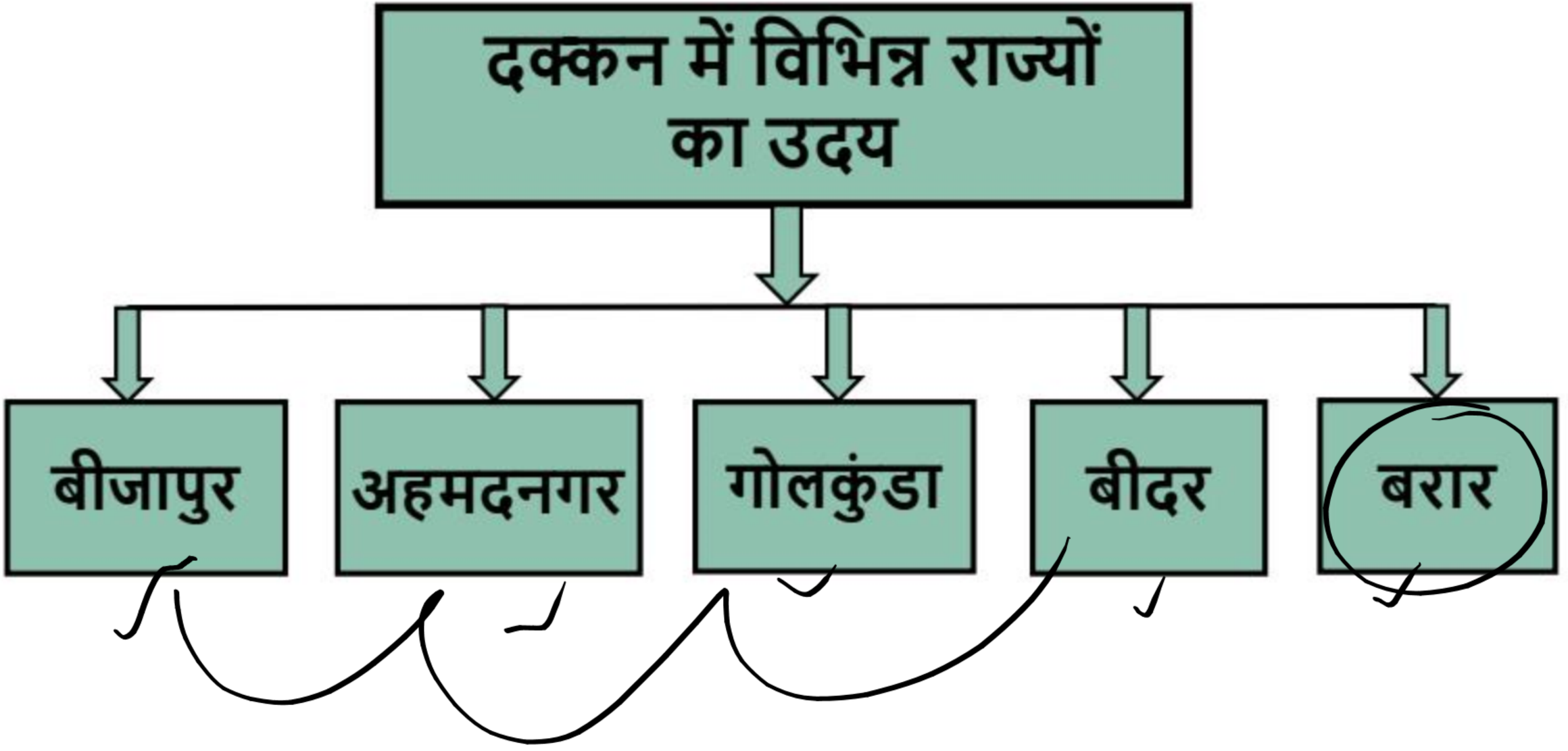
दक्कन में विभिन्न राज्यों का उदय
बीजापुर
अहमदनगर
गोलकुंडा
बीदर
बरार

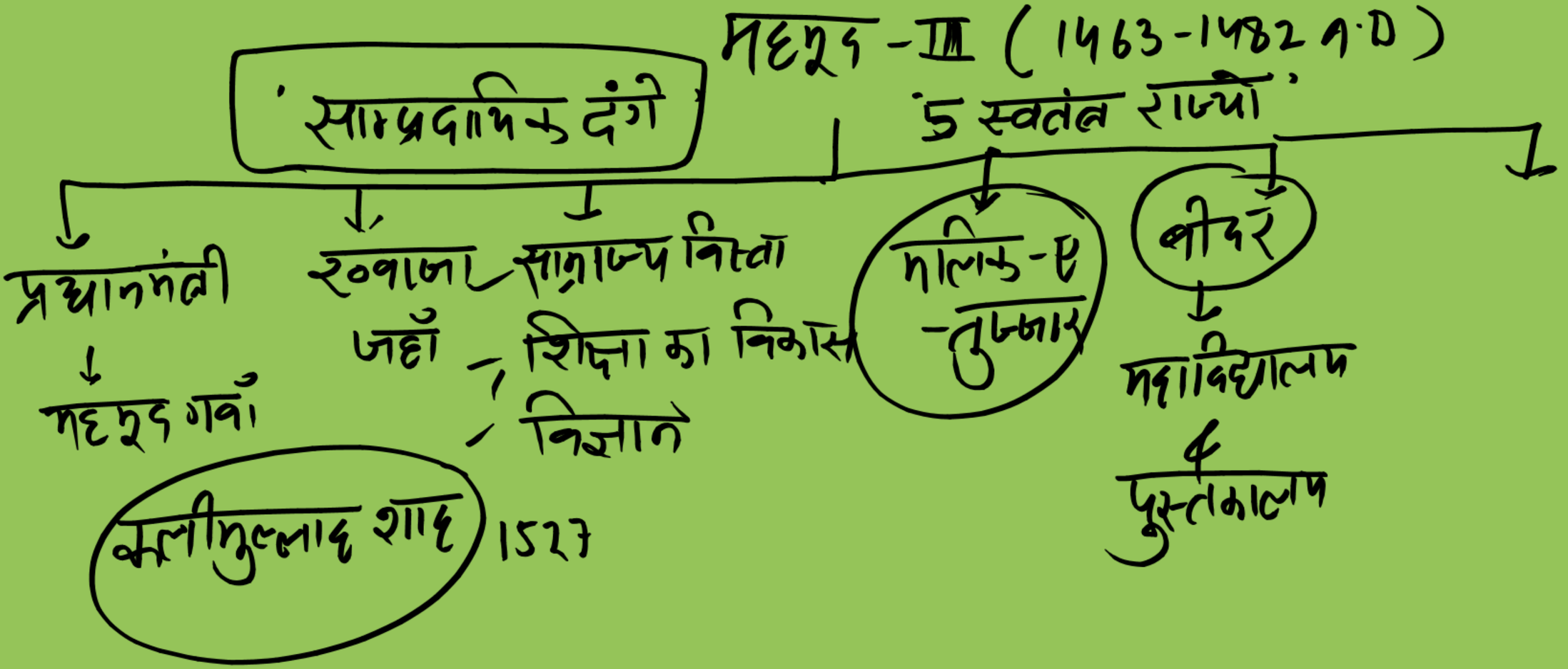

महमूद - III (1463-1482 A.D)

'5 स्वतंत्र राज्यों'

'साम्प्रदायिक दंगे'

प्रधानमंत्री
↓
महमूद गवाँ

ख्वाजा जहाँ

साम्राज्य विस्तार
- शिक्षा का विकास
- विज्ञान

कलीमुल्लाह शाह 1527

मलिक-ए-तुज्जार

बीदर
↓
महाविद्यालय
&
पुस्तकालय

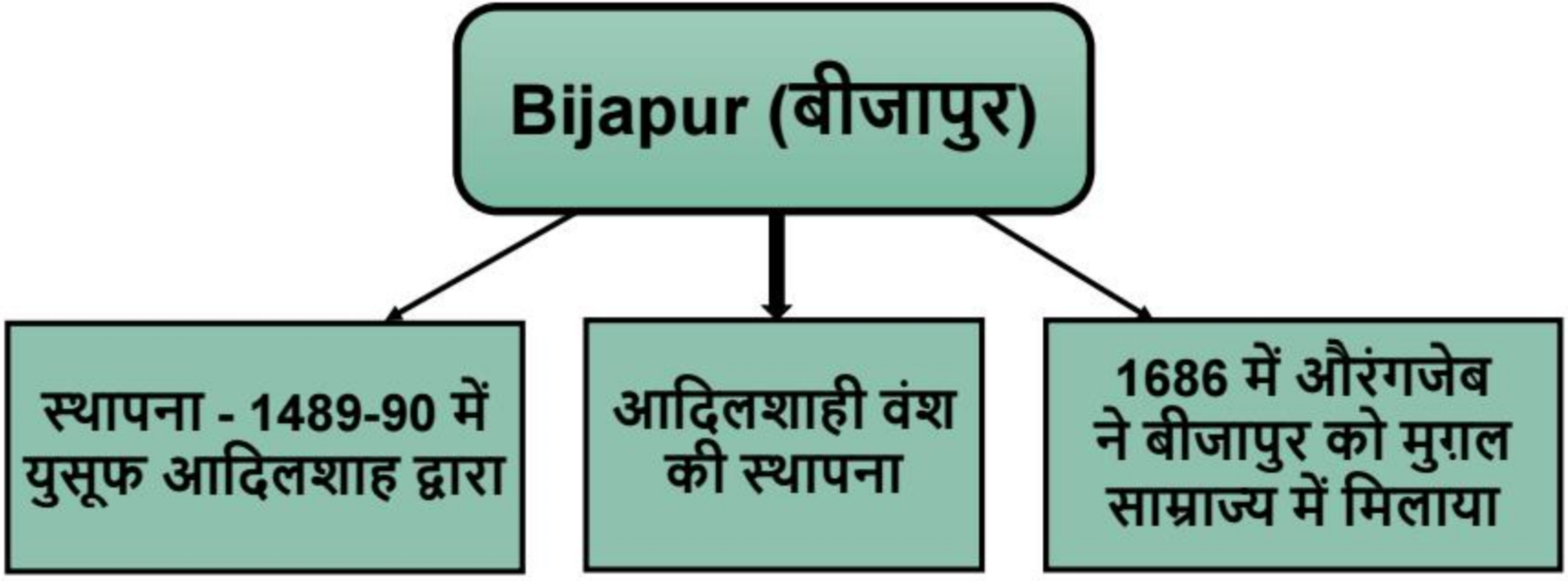
Bijapur (बीजापुर)
स्थापना - 1489-90 में युसूफ आदिलशाह द्वारा
आदिलशाही वंश की स्थापना
1686 में औरंगजेब ने बीजापुर को मुग़ल साम्राज्य में मिलाया

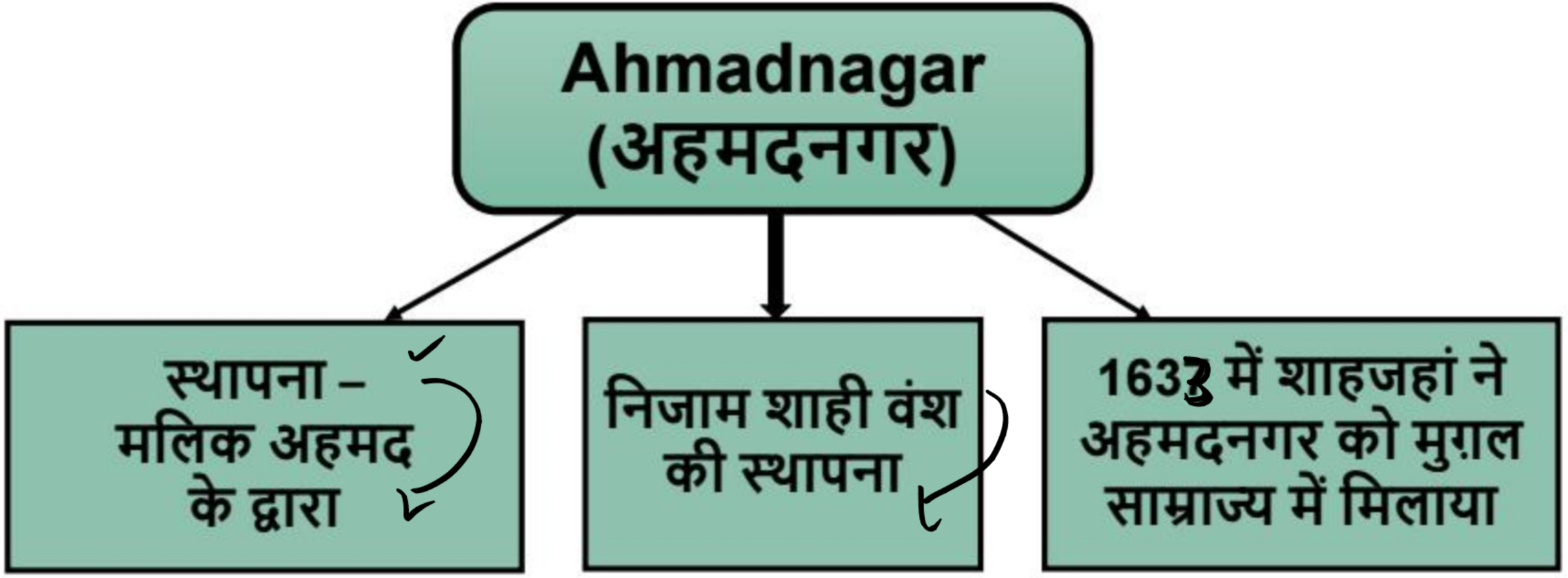
Ahmadnagar
(अहमदनगर)
स्थापना –
मलिक अहमद
के द्वारा
निजाम शाही वंश
की स्थापना
1633 में शाहजहां ने
अहमदनगर को मुग़ल
साम्राज्य में मिलाया

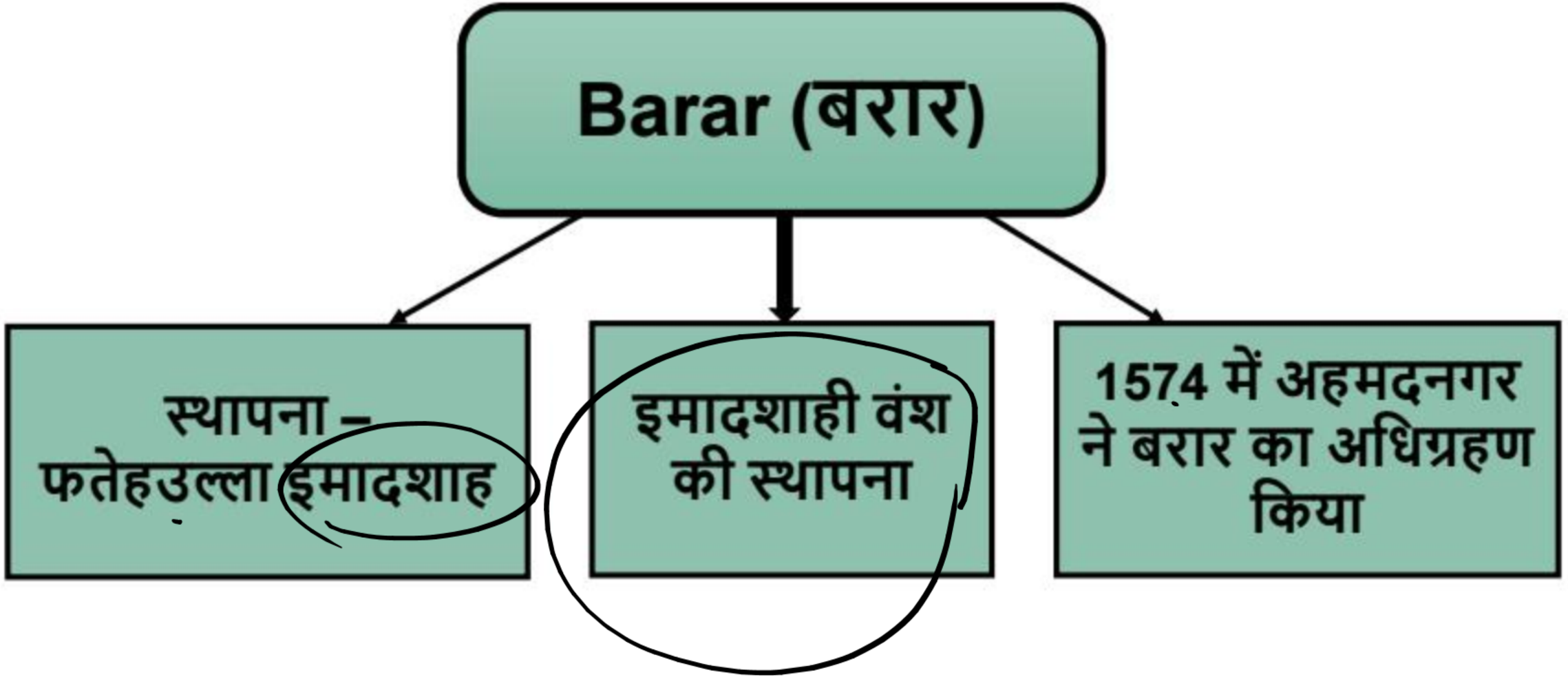
Barar (बरार)
स्थापना –
फतेहउल्ला इमादशाह
इमादशाही वंश
की स्थापना
1574 में अहमदनगर
ने बरार का अधिग्रहण
किया

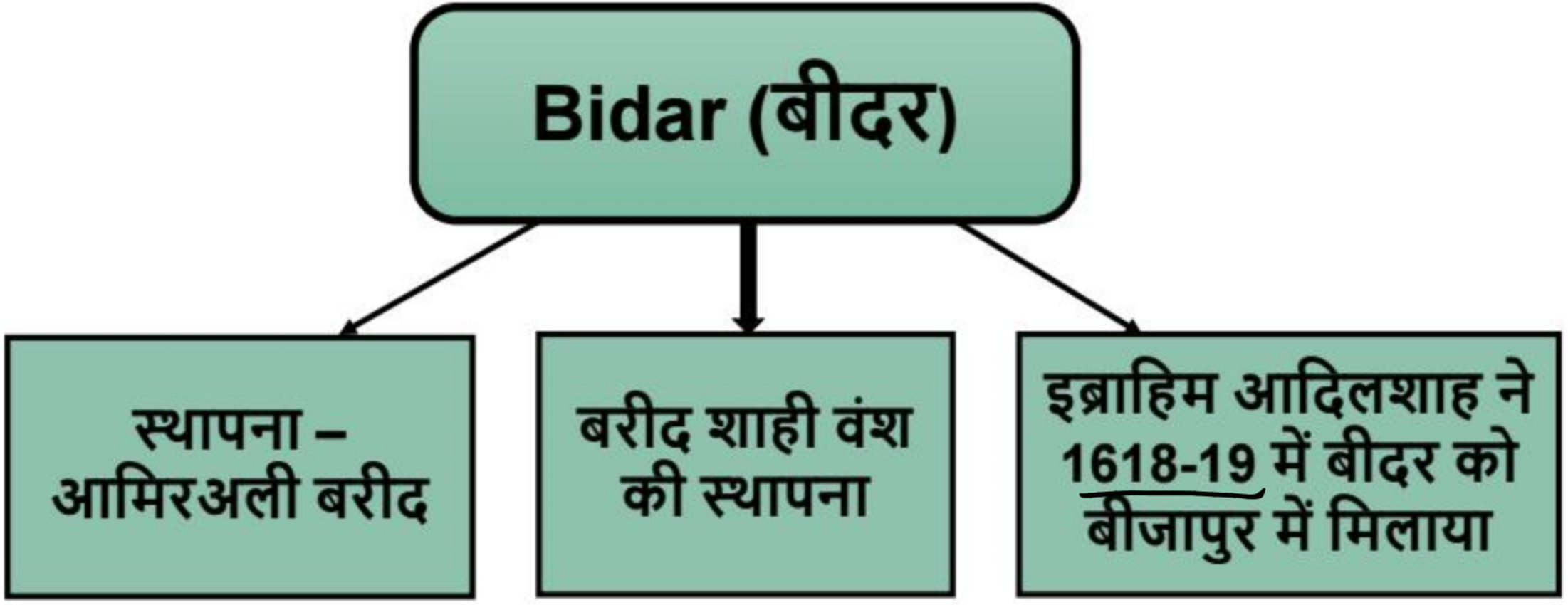
Bidar (बीदर)
स्थापना –
आमिरअली बरीद
बरीद शाही वंश
की स्थापना
इब्राहिम आदिलशाह ने
1618-19 में बीदर को
बीजापुर में मिलाया

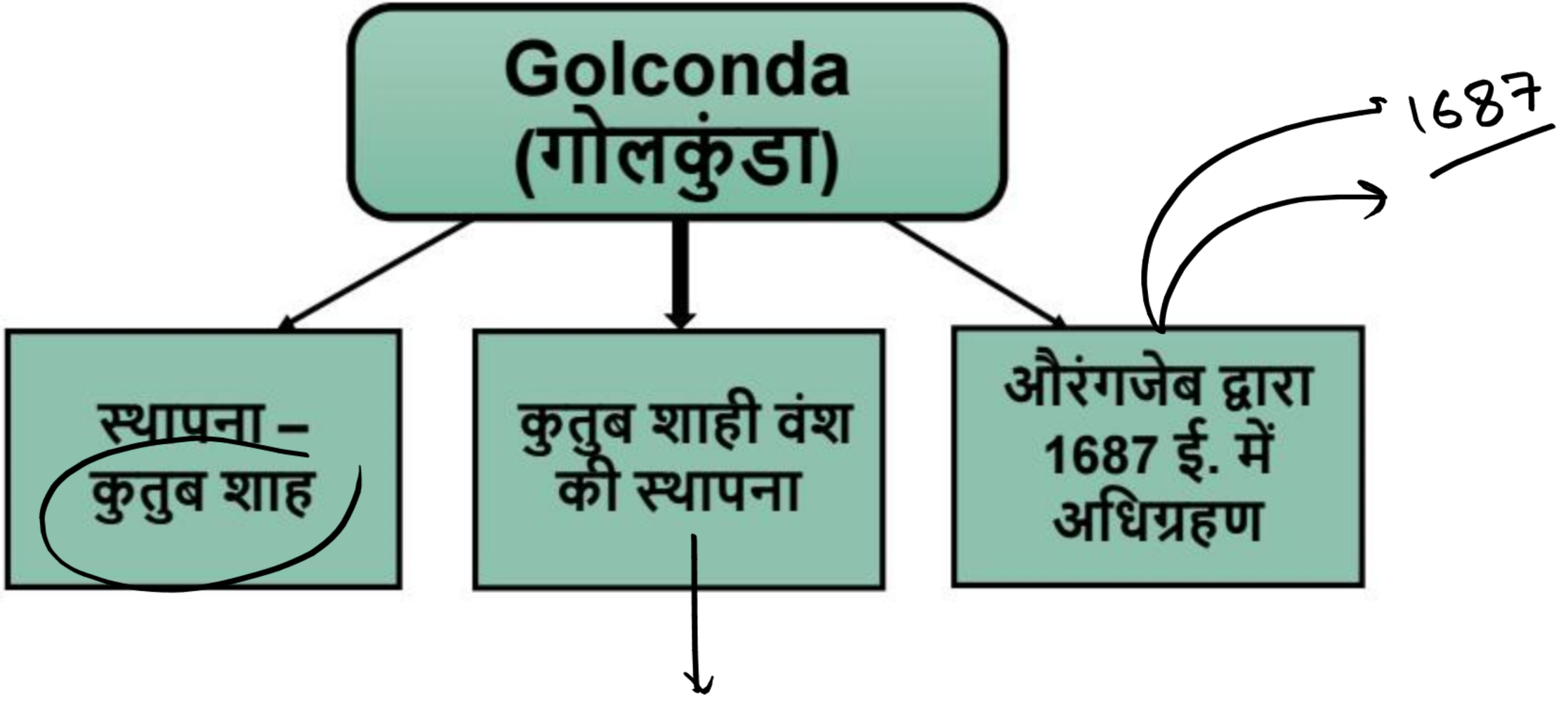
Golconda
(गोलकुंडा)
स्थापना –
कुतुब शाह
कुतुब शाही वंश
की स्थापना
औरंगजेब द्वारा
1687 ई. में
अधिग्रहण
1687

भक्ति - सूफी आंदोलन

By- Manju Kumar

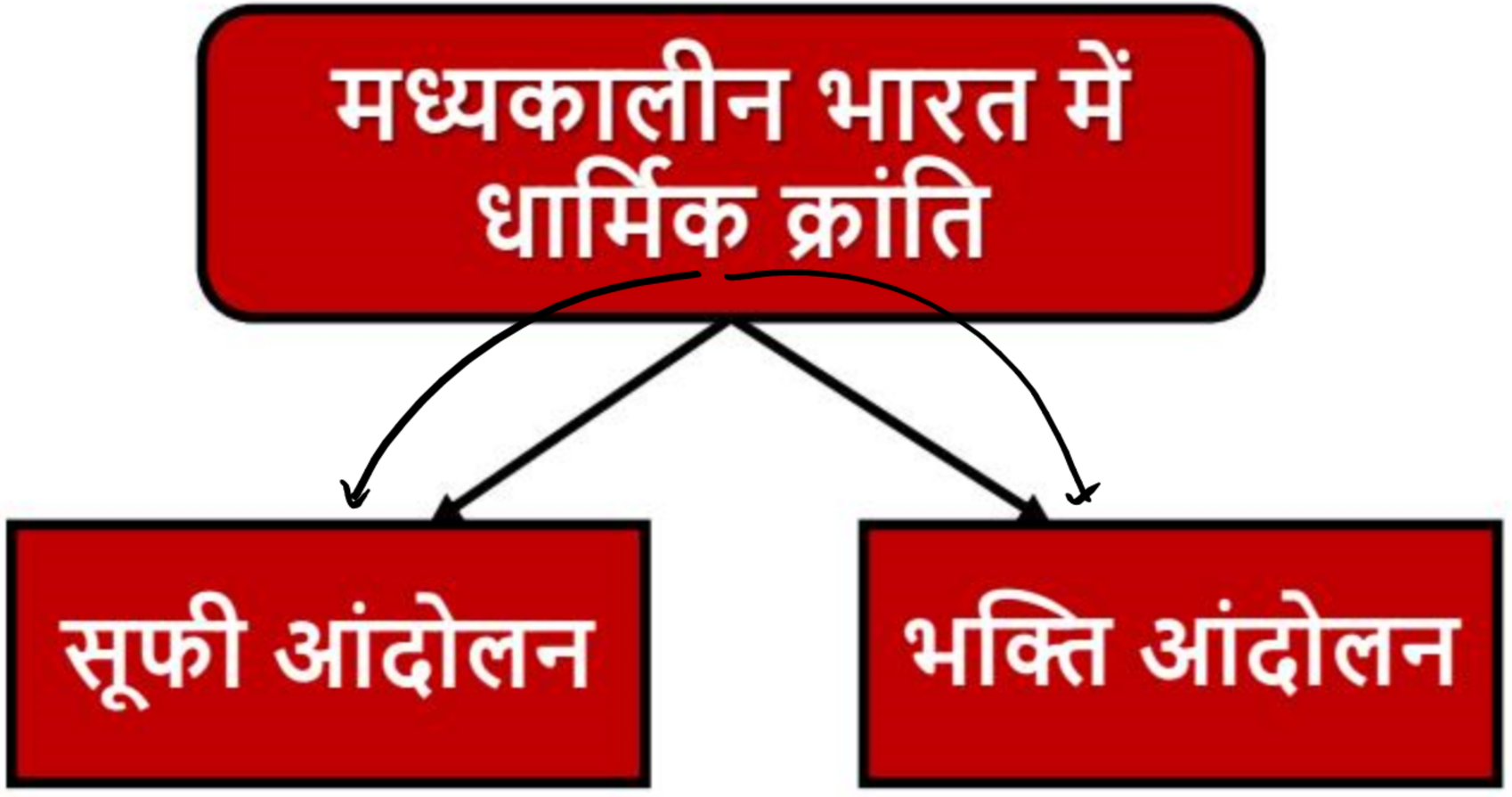
मध्यकालीन भारत में
धार्मिक क्रांति
सूफी आंदोलन
भक्ति आंदोलन

भारत मे धार्मिक क्रान्ति

खानकाह

- प्राचीन काल
  - बौद्ध धर्म & जैनधर्म
- मध्यकाल
  - सूफी आन्दोलन
  - भक्ति आन्दोलन
- आधुनिक काल
  - सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन

सूफी, सफा

Sufism
(सूफी आंदोलन)

Sufism
(सूफी आंदोलन)

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पहले ही उदित.
- तुर्की राज्य की स्थापना के बाद सूफियों का बड़ा समूह भारत पहुंचा.
- भारत के विभिन्न भागों में सिलसिलो की स्थापना की.
- इस्लाम का उदारवादी आंदोलन .

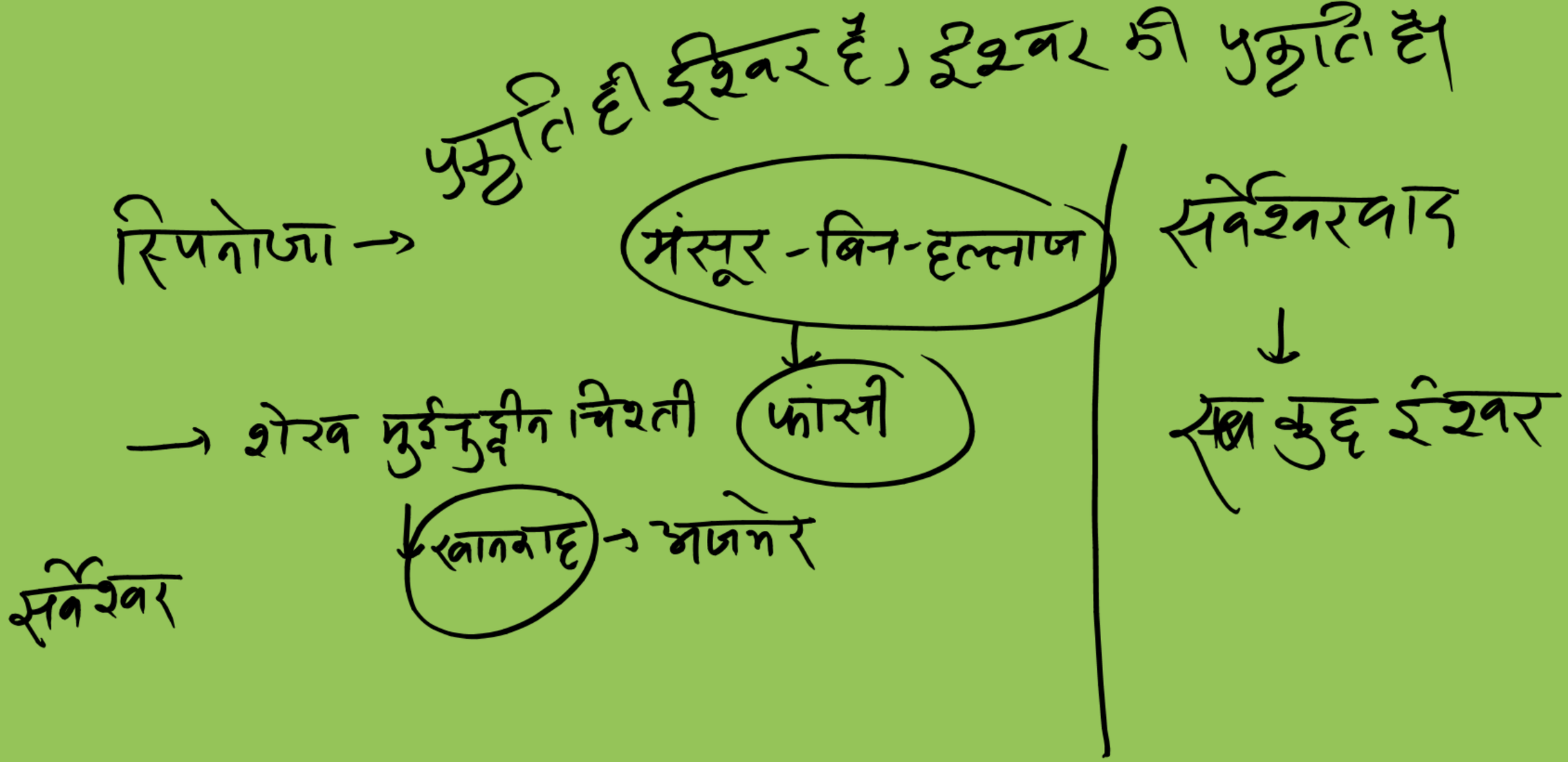

प्रकृति ही ईश्वर है, ईश्वर भी प्रकृति है।

स्पिनोजा →

मंसूर-बिन-हल्लाज → फांसी

→ शेख मुईनुद्दीन चिश्ती

↓ खानकाह → अजमेर

सर्वेश्वर

सर्वेश्वरवाद

↓

सब कुछ ईश्वर

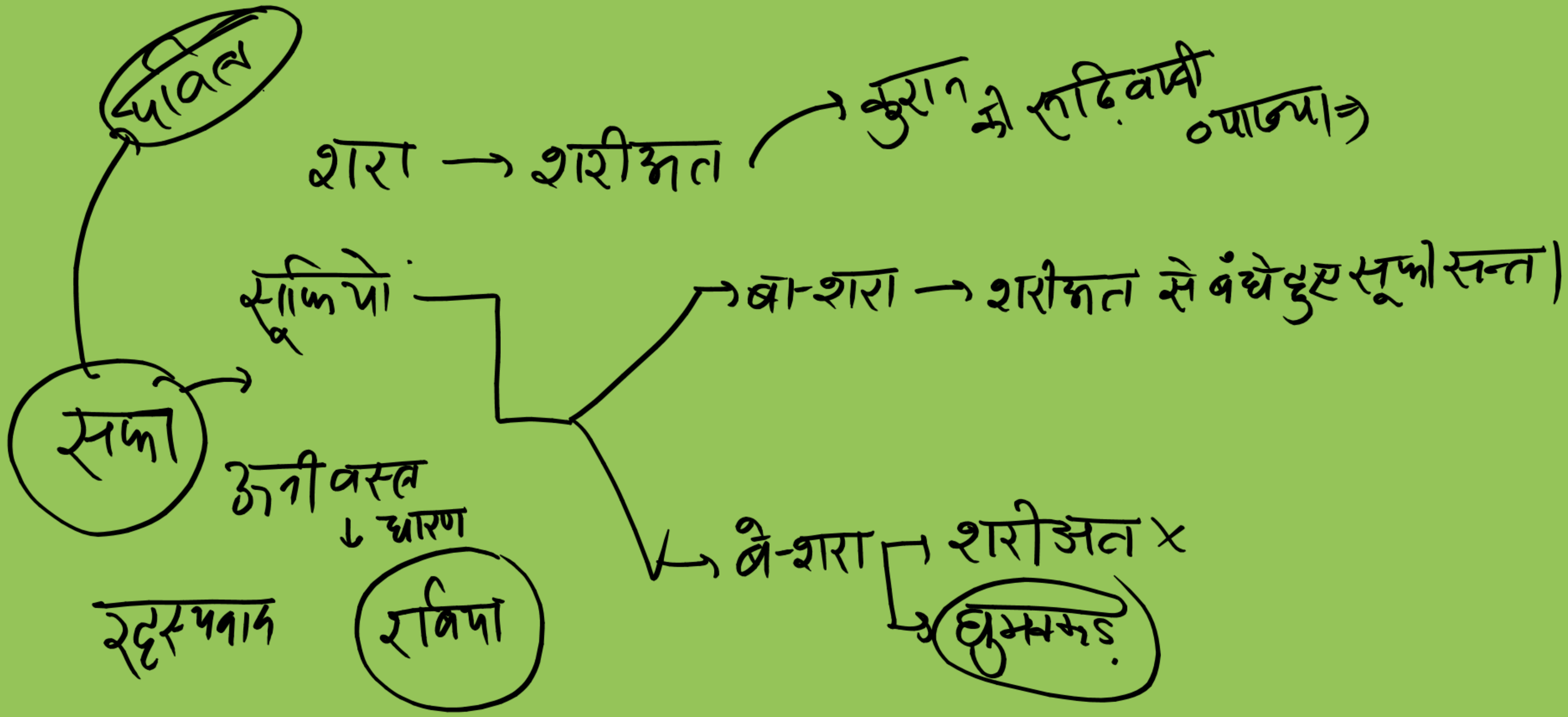

पवित्र
शरा → शरीअत → कुरान और हदीस की व्याख्या
सफा
सूफियों
बा-शरा → शरीअत से बंधे हुए सूफी सन्त।
बे-शरा → शरीअत ×
घुमक्कड़
ऊनी वस्त्र
↓ धारण
खिदा
रहस्यवाद

- भारत में 12 वीं शताब्दी में फैला.
- पहले सूफी संत लाहौर के शेख इस्माइल ने अपने उदारवादी विचारों का प्रचार-प्रसार आरंभ किया.
- ईसाई और बौद्ध धर्म के सन्यासियों का प्रभाव था.
- इन्होंने खानकाहो और दरगाहो की स्थापना की.

- सूफी शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द सफा से हुई है जिसके दो अर्थ हैं-

1. जो ऊनी वस्त्र पहनता है.
2. पवित्रता.

- सूफी रहस्यवाद कुरान की उदारवादी व्याख्या से संबंधित है, जिसे तरीकात कहा जाता है.
- शरीयत कुरान की रूढ़ीवादी या संकीर्ण व्याख्या है.

- सूफियों के अनुसार ईश्वर और आत्मा एक ही है.
- सूफी ईश्वर के एकत्व में विश्वास करते थे
- सूफी सिलसिलो को दो भागों में विभक्त किया जाता है :-

1. Ba-shara (बा-शरा)
2. Be-shara (बे-शरा)

- Ba-shara :- इस्लामिक परंपराओं और कुरान में विश्वास करते थे.

- **Be-shara**:- जो सूफी सन्त शरीअत से बंधे हुए थे।
- कुरान की उदार व्याख्या में विश्वास करते थे और कट्टर नहीं थे.
- भारत में सबसे प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती थे.
- भारत में 1192 में मोहम्मद गौरी की सेना के साथ आए थे.
- मुइनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर में अपना खानकाह स्थापित किया और अजमेर में इनकी गतिविधियों का केंद्र बना.

- मुइनुद्दीन चिश्ती के कई शिष्य थे जिन्हें चिश्ती कहा जाता था.
- अन्य प्रसिद्ध सूफी संत बहाउद्दीन जकारिया थे जो एक अन्य रहस्यवादी सूफी संत शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी से प्रभावित थे.
- एक अन्य प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया थे जो चिश्ती सिलसिले से संबंधित थे.

- यह सूफी संत आज भी श्रेध्य हैं ना केवल मुस्लिमों में बल्कि हिंदुओं में भी.
- इनकी मजारे दोनों संप्रदाय के लोगों के लिए उतनी ही प्रसिद्ध हैं.

सूफी सिलसिले

➢ चिश्ती :-

- **संस्थापक -** ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (गौरी के साथ आये)

  बुरहानुद्दीन ग़रीब।

- **प्रचार का क्षेत्र -** उत्तर भारत (दिल्ली-अजमेर) दक्षिण भारत।

- **प्रसिद्ध संत-**

1. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
2. फरीद-उल-दीन गंज-ए-शकर (उनके छंद सिखों के आदि ग्रंथ में शामिल है)
3. निज़ामुद्दीन औलिया
4. नसीरुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली

- **सिद्धांत -**

- शाही दरबार से दूर रहते थे.
- संगीत गायन से प्रसिद्ध, इनको समा (महबूब-ए-इलाही) कहा जाता है।

➢ सुहरावर्दी:-

- **संस्थापक-** शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी
- **प्रचार का क्षेत्र-** ~~पंजाब~~ मुल्तान
- **प्रसिद्ध संत-** 1. हमीदुद्दीन नागोरी

    2. रुक्नुद्दीन अब्दुल फाथ

    3. बहा-उद-दिन ज़कारिया
- **सिद्धांत-** शाही सुविधाएं स्वीकार की।

➢ कादरी :-

संस्थापक - शेख निज़ामत उल्लाह

प्रचार का क्षेत्र - सिंध लाहौर

➢ प्रसिद्ध संत-

1. नसीरुद्दीन मोहम्मद जिलानी

2. दारा शिकोह (शाहजहाँ का बेटा)

➢ नक्सबंदी:-

- **संस्थापक** - ख्वाज़ा बाकी बिल्लाह
- **प्रचार का क्षेत्र**- उत्तर भारत
- **प्रसिद्ध संत :-**

1. शेख अहमद सरहिंदी (मुजादिद)
2. उबैदुल्लाह अहरार
3. बाबर

- **सिद्धांत – रूढ़िवादी संप्रदाय:-**
- मुजदादी ने शियाओं का विरोध किया,
- जहाँगीर द्वारा गिरफ्तार किया गया।

➢ फिरदौसी :-

- **संस्थापक -** बदरुद्दीन
- **प्रचार का क्षेत्र-** बिहार, बंगाल
- **प्रसिद्ध संत :-**

1. बदुद्दीन समरगजी
2. शहीद इबान याहिया मनेरी

➢ रोशनिया सिलसिला:- (AKBAR TIME) अकबर

- संस्थापक - मियाँ बयाज़िद अंसारी (पीर रोशन)
- प्रचार का क्षेत्र - उत्तर पश्चिम का जनजातीय क्षेत्र
- सिद्धांत- अंसारी ने ख़ैर-उल-ब्यान किताब लिखी

➢ महादवी :-

- संस्थापक - मुल्लाह मोहम्मद महदी
- प्रचार का क्षेत्र- जौनपुर
- सिद्धांत - रूढ़िवादी मुसलमानों का विरोध किया।

➢ रिशी :-

- **संस्थापक-** नुरुद्दीन नूरानी (संरक्षक)
- **प्रचार का क्षेत्र-** कश्मीर

➢ क़लंदरिया:-

- **संस्थापक-** अबू वली क़लंदर
- **प्रसिद्ध संत-** सिदी मौला
- **सिद्धांत-** भटकते भिक्षुओं को दरवेश कहा जाता था।

❖ बाबा फरीद पर संगठित हमला।

➢ शत्तारी :-

- **संस्थापक -** अब्दुल्ला शत्तारी
- **प्रचार का क्षेत्र -** गुजरात, मेरठ, बिहार
- **प्रसिद्ध संत -** वाजी अल दिन, शाह पीर
- **सिद्धांत -** ईश्वर के साथ सीधे संपर्क का दावा किया.

'रामानन्द'

भक्ति → ईश्वर के प्रति समर्पण

'राम की आराधना'

Bhakti Movement
(भक्ति आंदोलन)

अलवार एवं नयनार

शंकराचार्य

Bhakti Movement
(भक्ति आंदोलन)

मोक्ष
बंधन
↓
जन्म-मरण चक्र

- भक्ति ईश्वर को समर्पित/ पूर्ण समर्पण के साथ आराधना है.
- भक्ति का मूल उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना होता है.
- भक्ति आंदोलन के संत प्रेम और शांति में विश्वास करते थे.

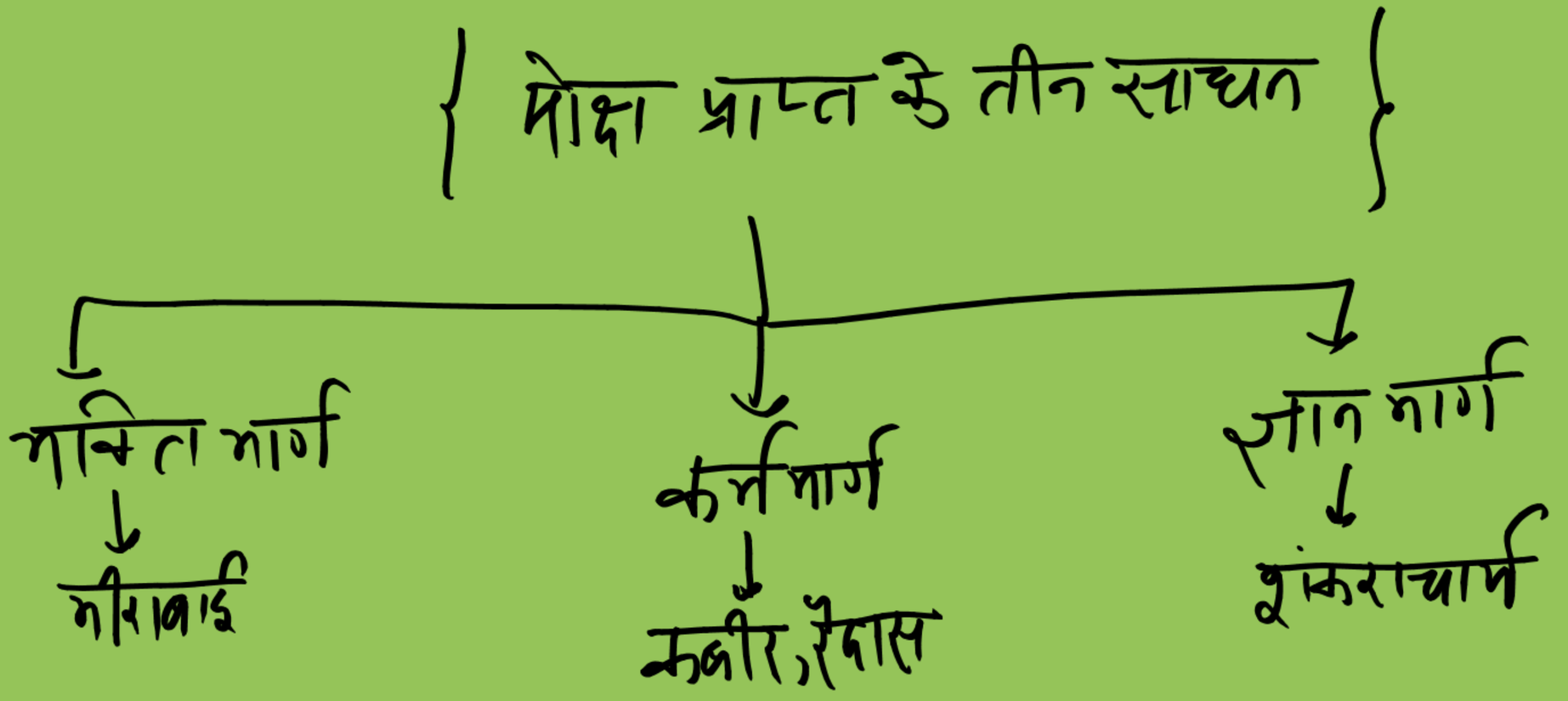
मोक्ष प्राप्त के तीन साधन
भक्ति मार्ग
मीराबाई
कर्म मार्ग
कबीर, रैदास
ज्ञान मार्ग
शंकराचार्य

- भक्ति आंदोलन मध्यकाल में संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध हुआ.
- अलवार (वैष्णव) और नयनार (शैव) इस समय दक्षिण भारत में प्रसिद्ध हुए.
- भक्ति संतों ने एक उदारवाद की हिंदूवादी नीतियों का अनुसरण किया तथा निम्न जातियों को संगठित किया.

- इस समय राम और कृष्ण प्रमुख देव बन गए.
- मोक्ष प्राप्त करने के लिए भक्ति संतों ने तीन मार्ग बताएं है:

1. **भक्ति मार्ग –** मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु
2. **ज्ञान मार्ग –** शंकराचार्य
3. **कर्ममार्ग –** कबीर, रैदास

Prominent Bhakti Saints
(प्रमुख भक्ति संत)

1. शंकराचार्य (788-822) –इस जगत में एक ही तत्व है –ब्रह्म
2. रामानुजाचार्य – विशिष्टाद्वैतवाद - विशिष्ट द्वैतवाद में विशिष्ट रूप से एक ही है – 11th Century
3. माधवाचार्य – द्वैतवाद [इस जगत में दो तत्व हैं ईश्वर और आत्मा] – 13th Century

4. **निम्बकाचार्य** –द्वैताद्वैतवाद [जो भी है और एक भी है दिखता दो है लेकिन एक ही है] – 13th-14th Century

5. **वल्लभाचार्य** – शुद्धाद्वैतवाद [शुद्ध रूप से दो हैं] – 15th Century

ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव ना परः

ब्रह्म ही सत्य हैं, जगत मिथ्या, जीव भी ब्रह्म से भिन्न कुछ भी नहीं है,

'अवर्णनीय'

'प्रच्छन्न बौद्ध' → अहम् ब्रह्मास्मि एवं तत्वमसि ब्रह्मास्मि'

Shankaracharya (शंकराचार्य)

- जन्म - कालिंदी केरल में.
- अद्वैतवाद संप्रदाय के संस्थापक.
- इन्हें प्रछन्न बौद्ध भी कहा जाता था.
- इन्हें आधुनिक हिंदू धर्म का उद्धारक कहा जाता है.
- इन्होंने उपनिषद भगवतगीता और ब्रह्मसूत्र का टीका लिखा.

➢ **इन्होंने चार मठों की स्थापना की :**

1. बद्रीनाथ
2. द्वारका
3. पुरी
4. श्रृंगेरी (मैसूर)

Ramanujacharya
(रामानुजाचार्य)

शिष्य → रामानंद

श्रीराम

- तमिल वैष्णव संत.
- विशिष्टाद्वैतवाद के दर्शन को आगे बढ़ाया.
- प्रसिद्ध पुस्तक वेदांत संग्रह लिखी.

Vallabhacharya (वल्लभाचार्य) [1479-1531]

शुद्धाद्वैतवाद

- एक समर्पित दार्शनिक.
- पुष्टीमार्ग संप्रदाय, वैष्णव मार्ग की स्थापना की.

Madhvacharya (माध्वाचार्य) [13th Century]

- कन्नड़ वैष्णव संत.
- द्वैतवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित किया.

Nimbakacharya (निम्बकाचार्य) [13th-14th Century]

द्वैताद्वैतवाद

- तेलुगु वैष्णव संत.
- द्वैत-अद्वैतवाद के प्रतिपादक

भक्ति आंदोलन की दो शाखा

1. Saguna Bhakti (सगुण शाखा)

- व्यक्तिवादी ईश्वर की अवधारणा में विश्वास करते थे.
- भगवान विष्णु की पूजा दो रूपों में करते थे - राम और कृष्ण.
- सामाजिक मामलों में अधिक उदार नहीं थे.

ईश्वर से संबंधित तीन मुख्य अवधारणाएँ

- ईश्वर को प्रकृतिवादी अवधारणा
  - प्रकृति के तत्वों के रूप में ईश्वर की आराधना
- व्यक्तिवादी अवधारणा
  - ईश्वर को व्यक्ति के रूप में
    - श्रीराम, श्रीकृष्ण
- अव्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर की अवधारणा
  - निर्गुण, निराकार, निर्विशेष

➢ प्रसिद्ध संत :-

1. रामानंद – 12 शिष्य – यह उत्तर और दक्षिण के भक्ति आंदोलनों के सेतु.
2. सूरदास
3. तुलसीदास
4. चैतन्य महाप्रभु
5. मीराबाई

2. Nirgun Bhakti
(निर्गुण भक्ति)

अद्वैतवादी

- ईश्वर की निर्व्यक्तिकवादी अवधारणा में विश्वास करते थे.
- ब्राह्मण धर्म के कर्मकांडो और जाति प्रथा के विरोधी थे.
- सामाजिक कार्य में अधिक उदार थे.

- **प्रसिद्ध संत :-**

1. कबीर
2. नानक
3. धन्ना जाट
4. रैदास
5. पीपा
6. दादू दयाल

ठानो तो करो
ठानो जरुर

Thank you